अंतरा-शब्दशक्ति

रिश्तों का धरोहर

कथा संग्रह

अदिति रूसिया

रिश्तों की धरोहर

(काव्य संग्रह)

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-12-3

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- अदिति रूसिया

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Rishton ki Dharohar by Aditi Rusiya

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अटूट बंधन

बचपन से ही मैंने हर रिश्ता बहुत क़रीब से जिया है ।मेरे लिए हर रिश्ता बहुत अहमियत रखता है चाहे वो कोई भी हो । *रिश्तों की धरोहर* में मैंने ऐसी ही कुछ कहानियाँ लिखी हैं जो कहीं न कहीं किसी अनोखे रिश्ते को दर्शाती हैं और संस्कारों को समेटे हुए नज़र आती हैं क्योंकि हर रिश्ता अटूट बंधन से बँधा हुआ होता है पर रिश्तों की डोर बहुत नाज़ुक होती है। अगर ये टूट जाएँ तो गाँठ पड़ जाती हैं। मेरी कहानियों में मैंने रिश्तों को एक धागे में मोती की तरह पिरो कर संजोया हैं मेरी कहानी का हर किरदार अपने रिश्तों को बचाने में लगा नज़र आता है क्योंकि मैं स्वयं रिश्तों को जोड़ कर रखने में विश्वास रखती हूँ मैंने सारे रिश्ते बख़ूबी निभाए हैं। मेरा हर रिश्ता बहुत अनोखा है। ये सब कुछ कर पाना बहुत मुश्किल होता है पर संजय जी के साथ बिना शायद ये सम्भव भी न होता।

अदिति रूसिया

समर्पण

ये पुस्तक समर्पित है

उन सभी रिश्तों को

जो व्यक्ति से परिवार,

परिवार से समाज

और

समाज से दुनिया का

निर्माण करने के लिए उत्तरदायी होते हैं।

अनुक्रमणिका

1. रिश्तों की धरोहर	7
2. प्रेम कहानी	12
3. देह	15
4. नया सवेरा	17
5. अपराधबोध	19
6. प्रतिक्रिया	21
7. पहचान	23
8. क्षमादान	24
9. संगति	25
10. संदेह	26
11. अपना पराया	28
12. प्यार के चिराग़	29
13. विकार और संस्कार	31
14. दृढ़ निश्चय	32

रिश्तों की धरोहर

नीरू रसोई का काम निपटा थकी हारी बैठी बस एक ही बात सोच रही थी,...!

इतने साल बीत गये हमारी शादी को फिर भी मैं आज तक मानव को नहीं समझ पाई और न ही मानव मुझे न मेरे दर्द को ! दिन ब दिन मानव का स्वभाव बदलता जा रहा है।

अब तो कुछ महीनों से ऐसा लग रहा है जैसे हम अपने रिश्तों को ज़बरदस्ती ढ़ो रहें हैं शायद कहीं न कहीं हमारे अहं टकरा रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि इन सब का असर हमारे बच्चों पर पड़े इतना सोचते ही नीरू की आँखें भर गई। कहीं कोई देख न ले उसने झट अपने पल्लू से अासूँ पोंछ लिए। आँख बंद कर थोड़ा आराम करना चाहती थी पर बार बार मानव का चेहरा सामने आ जाता फिर मन में बस एक ही विचार घूमता कि आख़िर मैंने ऐसा क्या किया है जो मानव मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हैं बिना कोई ग़लती के आख़िर क्यों? बस यही सवाल कई दिनों से परेशान कर रहा था। कई बार मैंने पूछना चाहा मानव तुमसे पर नहीं पूछ पाई कुछ तो कहो मेरी ग़लतियाँ बताओ,... इतना सोचते सोचते कमरे में सिसकियों की आवाज़ गूँज उठी !

अपने आँसुओं को पोंछती हुई बुदबुदाई मैं ही हमेशा दोषी ठहराई जाती हूँ क्या हमेशा सारी ग़लतियाँ सिर्फ़ और सिर्फ़ औरतों

की होती क्या कभी पति ग़लत नहीं हो सकता ! आज मैंने तुम्हारे सारे परिवार को एक सूत्र में बाँध कर रखा है वरना मानव तुम्हें तो कोई मतलब ही नहीं किसी से। बस सुबह ऑफ़िस जाना वहाँ से आकर खाना और सो जाना। सारे रिश्ते नाते तो मैं ही निभाती हूँ। न तुम्हें घर की परवाह है न ही बच्चों की न अपने माता पिता की। फिर भी न जाने तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

अब हर बात बर्दाश्त के बाहर हो चुकी है।बस अब और नहीं तुम्हारे साथ ये जीवन यूँ घुटघुट कर मैं नहीं जी पाऊँगी अब मैं यहाँ से चली जाऊँगी।हमेशा हमेशा के लिए ....!

अविरल अश्रुधारा बह रही थी कमरे में सिसकियाँ गूँज रही थी रोते रोते कब समय बीत गया पता ही नहीं चला !

नीरू..... नीरू कहाँ खोई हो माँ ने हिलाया तब तंदरा टूटी हड़बड़ा कर आँसू पोछते हुए बोली कुछ नहीं माँ कुछ भी तो नहीं !

अच्छा तो ये बताओ तुम रो क्यों रही थी ?

नहीं तो माँ बस ऐसे ही।

तुम्हारी मानव से कुछ बात हो गई क्या ? आने दो उसे मैं उसकी ख़बर लेती हूँ ..!

नहीं माँ ! ऐसा कुछ नहीं है जैसा आप समझ रही हैं।

फिर क्या बात है बेटा ? मैं कई दिनों से देख रही हूँ, खाने की मेज़ पर भी सब शांति पूर्वक खाना खाते हैं मानव भी चुपचाप

ऑफ़िस चला जाता है। पापा भी कई बार पूछ चुके हैं कि आख़िर हुआ क्या घर पर इतना सन्नाटा अच्छा नहीं लगता।

माँ मैं मानव के साथ अब और नहीं रह सकती बस बहुत हो गया,.....!

क्या?

ये क्या कह रही हो नीरू होश में तो हो !

इस तरह छोटी छोटी बातों से कोई घर छोड़कर जाता है क्या माँ ने थोड़ा कड़क आवाज़ में कहा।

तुमने सोचा इन सब का असर तुम्हारे बच्चों पर क्या होगा! इस विषय पर ज़रा ठंडे दिमाग से सोचना बाद में बात करते हैं। खाना मेज़ पर लगा दिया है बाहर पापा इंतज़ार कर रहे हैं,....!

मुझे भूख नहीं है माँ आप खा लो।

एक बात और है माँ हमेशा एक पत्नि या बहु ही दोषी क्यों होती है ?

मैंने कहा न बाद में बात करेंगे चलो चुपचाप खाना खाओ मुझे कुछ नहीं सुनना।

थोड़ा बहुत खाना खाकर माँ से बहुत सी बातें कर नीरू का मन हल्का हुआ। माँ ने नीरू को बड़े प्यार से समझाया बेटा ये रिश्तों की धरोहर बड़े सहेज कर रखना पड़ती है। रिश्ते बड़े नाज़ुक कच्ची डोर से बँधे होते हैं, एक बार अगर इनमें गाँठ पड़ गई तो जुड़ना बहुत मुश्किल होता है। रिश्ते बहुत संभाल कर निभाये

जाते हैं। पति पतनि का रिश्ता बहुत पवित्र और पाक रिश्ता होता इससे ख़ूबसूरत तो कोई रिश्ता ही नहीं। मर्द कभी भी अपना अहं नहीं त्याग सकता। पर औरत ममता की मूरत होती है ईश्वर ने उसे सहनशील बनाया है, एक औरत ही है जो सब अपने दुख भूलकर सबको अपने आँचल में समेट लेती है। तुम भी बहुत अच्छी हो नीरू तुमने तो सारे घर को मोती की तरह एक माला में पिरो रखा है

पूरा घर तुम्हें चाहता है बेटा। तुम विशाल हृदया हो बड़ी बनो अपना अहं त्यागो और पूछो कि क्या बात है वरना ग़लतफ़हमी में रहकर अपने सुंदर रिश्ते को खो दोगी और कहीं ऐसा न हो बेटा कि बाद में पछतावा ही रह जाये।

माँ की बातों को ध्यान में रख नीरू ने विचार किया और सोचा एक मौक़ा मैं स्वयं को ही देती हूँ हो सकता है मानव परेशान हों किसी बात को लेकर, मैं परेशान न हो जाऊँ शायद ये सोचकर मुझे न बताया हो ! आज मैं मानव से बात करूँगी मैं ही पहल कर लेती हूँ। माँ सच कह रही थी मैं छोटी तो नहीं हो जाऊँगी।

मानव के आते ही,.....!

मानव आज हम डिनर के लिए बाहर चलते हैं बच्चों को माँ रख लेंगी काफ़ी समय से हम कहीं घूमने भी नहीं गए हैं। चलो मानव जल्दी करो न ! देखो मैंने फ़िल्म की दो टिकिट भी बुक कर ली हैं। नीरू बस बोलती ही जा रही थी उसने मानव को

कुछ बोलने का मौक़ा ही नहीं दिया। माँ हम आते हैं कहकर दोनों चले गये

माँ बैठे बैठे मुस्कुरा रही थीं सोच रही थीं आज नीरू ने एक क़दम बढ़ाकर मेरी रिश्तों की धरोहर को बचा लिया।

प्रेम कहानी

नीता.....ओ नीता....!

आओ बेटा क्या कर रही हो !

क्या है माँ? क्यों चिल्ला रही हो।

पापा बुला रहे हैं। वहीं से बोलती रहोगी या इधर भी आओगी।

आपने न बच्चों को बहुत सिर पर चढ़ा कर रखा है कभी मेरी बात सुनते ही नहीं।

अरे क्यों इतना परेशान होती हो रमा, अभी बच्चे हाई तो हैं धीरे-धीरे सब सीख जाएँगे।

हमेशा उनका पक्ष मत लिया करो। कहीं ऐसा न हो बाद में पछताना पड़े। दिनभर सिर्फ़ मोबाईल पर लगी रहती है। पूछो तो कहती है आपको क्या करना माँ।

नहीं! ऐसा कुछ नहीं होगा! नीता बहुत समझदार है। क्या शिकायत कर रही हो माँ ? पापा से,.....!

आ गई बोलो क्या काम है?

नीता हमने तुम्हारे लिए लड़का देखा है। शाम को तैयार रहना मिलने जाना है।

नहीं पापा मुझे अभी शादी नहीं करनी है।

क्यों ?

नीता जवाब दो।

पापा कुछ पूछ रहे हैं...!

मैंने कहा न पापा मुझे नहीं करनी,...!

लड़का अच्छा है बेटा। ऐसे अच्छे रिश्ते मिलते कहा हैं, परिचित भी हैं, अच्छी जॉब है एक बार मिल तो लो।

मैंने कहा न पापा मुझे शादी नहीं करनी,..!

ये कैसा तरीक़ा है तुम्हारा पापा से बात करने का?

मम्मी प्लीज़ आप बीच में मत बोलो।

देख रहे है कितनी बदतमीज होती जा रही है। ये सब आपके लाड़-प्यार का नतीजा है।

मैं हमेशा कहती रही इतनी छूट मत दो। आपको ही जवाब दे रही है।

अरे ! अभी नहीं करोगी शादी तो कब करोगी। उम्र निकली जा रही है।

शादी के नाम से इतना चिड़ती क्यों हो?

बेटा मैंने तुम्हें हमेशा एक दोस्त बन हर वक़्त तुम्हारा साथ दिया है। तुम्हारे साथ के बच्चों के बच्चे भी गए।

माँ !

बताओ मुझसे शादी करने कहती हो, कौन ख़ुश है? शालिनी जिसने अपनी पसंद के लड़के से शादी की या निशा जिसने अपनी मम्मी पापा की पसंद से शादी की।

क्या हुआ माँ बताओ इन सबका?

शादी की, बच्चे। पैदा किये और कुछ सालों में ही शालिनी की प्रेम कहानी ख़त्म हो गई।

ऐसे कितने उदाहरण दूँ माँ। पापा आपको। आज हर किसी की शादियाँ टूट रही हैं।

दूर मत जाओ माँ अपने सामने वाली आंटी को ही देख लो क्या मिला शादी करके उन्हें माँ शादी के ३० साल बाद उन पर पति ने चरित्र हीन होने का इल्ज़ाम लगाया और छोड़ दिया। कौन सुखी आज?

इन सब के बीच सिर्फ़ लड़कियाँ ही सफ़र करती हैं।

मुझे जब लगेगा मुझे शादी करनी है बता दूँगी। आप मुझ पर शादी के लिए दबाव न डालें।

आज न हर प्रेम विवाह सफल हो रहे हैं न ही अरेंज।

नीता की बात भी ग़लत नहीं थी। उसने अपने आस पास सिर्फ़ रिश्तों को बिखरते ही तो देखा था।

उसकी बातें सुन दोनों हाई स्तब्ध रह गए,...!

देह

नीरू अपने बेटे की शादी को लेकर बड़ी ख़ुश थी। बहुत से सपने सज़ा रखे थे नीरू ने समीर की शादी के। और सही भी था समीर नीरू का इकलौता बेटा था। बड़े अरमान थे उसकी शादी के। आख़िर वो दिन भी आ गया संकेत और नीरू ने बड़े धूम-धाम से समीर की शादी की। रुचि को बहु के रूप में पा सभी बड़े ख़ुश थे।

सब कुछ ठीक चल रहा था कि अचानक संकेत को दिल का दौरा पड़ा और वो शांत हो गए,...!

संकेत के जाने के बाद नीरू बहुत अकेला महसूस करती वो गुमसुम सी रहने लगी। संकेत के जाने के कुछ दिनों बाद ही समीर को प्यारा सा बेटा हुआ।

अब तो सारा समय नीरू का राघव की देखभाल में ही बीत जाता। रुचि ने भी देखा नीरू बच्चे की देखभाल अच्छे से कर रही है और साथ ही घर के काम भी उसने घर पर ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया।

समय यूँ ही बीत रहा था। नीरू की उम्र भी हो चली थी। बड़ती उम्र वजह से नीरू अब पहले की तरह घर के काम नहीं कर पाती थी, ऊपर से बी पी की मरीज़। अब तो नीरू के घर आए दिन किसी न किसी बात लेकर झगड़े होने लगे। समीर या चुप

रहता या फिर कहता माँ तुम काम क्यों नहीं करती दिनभर तो ख़ाली बैठी रहती हो ? इन सब बातों का परिणाम ये हुआ की अधिक टेंशन की वजह से नीरू ने बिस्तर पकड़ लिया।अब तो नीरू पे जैसे गाज ही गिर पड़ी। दो वक़्त खाना भी ताने के साथ परोसा जाता।

उसका तो जैसे जीना ही दूभर हो गया। कभी कभी जो नीरू से मिलने उसकी सहेलियाँ आती थीं उनका भी आना बंद करवा दिया। धीरे धीरे सारी बातें समीर के कानों तक पहुँची। समीर अपनी माँ को बहुत चाहता था रोज़ की कलह से बचने के लिए ही रुचि के सामने माँ को ही बोल दिया करता। समीर ने जब देखा पानी सर से ऊपर जा रहा है और रुचि अपनी हद पर कर रही है उससे रहा न गया। एक दिन समीर और रुचि बीच माँ को लेकर बहुत बहस हुई। रुचि बहुत ग़ुस्से में थी उसने आव देखा न ताव ग़ुस्से में बोल दिया अपनी माँ को वृद्धाश्रम क्यों नहीं भेज देते। इतना सुनते ही चटाक....! की आवाज़ पूरे कमरे में गूँज गई....! किस बात का ग़ुरूर है तुम्हें रुचि! माँ जब तक कर सकती थी माँ ने किया । अब तुम देखो माँ का देह कितनी जीर्ण हो चुकी है उम्र हो चुकी है माँ की। आज तुम अपनी जिस देह का घमंड कर रही हो न वो भी चार दिन में ढल जाएगी रुचि....!!

नया सवेरा

नीरू और समीर की सभी मिसालें दिया करते थे। उन्हें सभी एक आदर्श जोड़ा माना करते थे। नीरू भी मुस्कुरा कर यही कहती सच इनके जैसा पति सभी को मिले। मैं तो बहुत ख़ुशनसीब हूँ जो मुझे इनके जैसा पति मिला।

पर इसका उल्टा ही था। समीर सबके सामने तो नीरू से बहुत प्यार जताते पर कमरे में आते ही न जाने ऐसा क्या था हमेशा ग़ुस्सा ही दिखाते। जब भी कभी बच्चे कहते पापा आप मम्मी से इतनी लड़ाई क्यों करते हो हँस कर जवाब देते, ये लड़ाई नहीं है बेटा ये तो नोक झोंक है। इससे तो प्यार बढ़ता है। नीरू भी बच्चों के सामने कुछ नहीं कहती। इसी तरह ज़िंदगी काट रही थी नीरू को अब इन सब की आदत सी पड़ चुकी थी। बुरा तो उसे तब लगता जब समीर अपनी बहनों और माता-पिता के सामने भी उसे नीचा दिखाते नीरू के बर्दाश्त के बाहर हो जाता तब जम कर लड़ाई होती।

एक दिन बिना किसी बात के समीर नीरू पे सबके सामने चिल्ला पड़े। नीरू की आँखों से अश्रु धारा बह निकली। ये सब नीरू के सहनशक्ति से बाहर था नीरू को ग़ुस्सा आ गया उसने भी कह दिया आज के बाद आप मुझसे कभी बात मत करना।मैं जितना सकती थी, मैंने सहन किया, पर अब और नहीं ? एक दिन मेरी ज़िंदगी में भी नया सवेरा ज़रूर होगा। आपको अपनी गल्तियों का जिस दिन एहसास हो जाए आप तब मेरे पास स्वयं चलकर

आओगे। और हाँ शादी के इतने सालों बाद अगर आप सोच रहे होगे कि मैं ये घर छोड़ कर चली जाऊँगी, तो आप ग़लत सोच रहे हो। मैं कहीं नहीं जा रही।जितना हक़ आपका है उतना ही मेरा भी।

समीर ये बात अच्छे से जानते थे कि, उनका कोई भी काम नीरू के बिना हो नहीं सकता। वैसे तो समीर बहुत ज़िद्दी थे, पर नीरू की इस ज़िद के आगे उन्हें झुकना ही पड़ा। हार कर समीर ने दो दिन में ही नीरू से माफ़ी माँग ली। पर नीरू ने भी इस बार ठान लिया था इतनी आसानी से माफ़ नहीं करेगी। मैं कैसे मान लूँ कि अब फिर आप ऐसा नहीं करोगे। आप हर बार यही कहते हो फिर कुछ दिनों में भूल जाते। बाहर तो बहुत अच्छे रहते हो पता नहीं घर आते ही आपको क्या हो जाता है।

मैं सच कह रहा हूँ नीरू,अब दुबारा ऐसा नहीं होगा यार,....! तुम जानती हो मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता। दो दिन हो गये हमने दूसरे बात नहीं की। तुम मेरी पत्नी हो मैं तुमसे नाराज़ होके कहाँ जाऊँगा। जो बातें मैं तुमसे कह सकता हूँ, वो किसी और से नहीं। कई बाहरी टेंशन होते हैं जो तुम्हारे पे ग़ुस्से के रूप में निकल जाता हैं। अब छोड़ो सब बातें। तुम्हारा नया सवेरा बाँह पसारे खड़ा है,.... नीरू की आँखे नम हो गईं। रूँधी आवाज़ से नीरू ने कहा ठीक है माफ़ किया ! अब दुबारा ऐसा मत करना मैं भी कहा रह पाती हूँ तुम बिन,...!

अपराध बोध

गरिमा की शादी निलेश से हुई। गरिमा निलेश की माँ की पसंद थी।निलेश ने गरिमा से शादी तो कर ली पर वो गरिमा के साथ ज़्यादा वक़्त नहीं बिताता था। शादी के तीन माह बीत गए पर निलेश गरिमा को लेकर कभी घर से बाहर ही नहीं गया न ही गरिमा से अधिक बात करता था। शुरू शुरू में गरिमा को लगा शायद निलेश थोड़ा वक़्त चाहते हैं एक दूसरे को समझने का इसलिए कभी कुछ बोला नहीं।

एक दिन गरिमा ने अपनी नंद को निलेश से कहते सुना और कितना वक़्त लोगे भाई भाभी को समझने का भाभी बहुत अच्छी हैं स्वभाव भी अच्छा है फिर क्यों? बीच में ही बात काटते हुए निलेश बोला तुझे कोई काम नहीं है क्या बिना सिर पैर की बातें लेकर बैठ जाती है, जा ज़रा चाय बना ला। गरिमा खड़ी सुन रही थी उसे लगा निलेश इस विषय पर बात ही नहीं करना चाहता किसी से, गरिमा अंदर गई रीना से पूछा क्या बातें हो रही थी भाई,बहन की। कुछ नहीं भाभी बस यूँ ही। अरे .. आप कुछ मेरे बारे में पूछ रहीं थी क्या कहा आपके भाई ने। बोला तो भाभी कुछ नहीं कहती हुई रीना चली गई।

रीना तो वहाँ से चली गई पर गरिमा के मन में हज़ारों प्रश्न उमड़ रहे थे। गरिमा गहरी सोच में डूबी हुई थी। सोच रही थी इतना अच्छा परिवार है, सभी लोग घर के बहुत अच्छे है पर

निलेश को मैं आज तक समझ ही नहीं पाई। कभी बहुत अच्छे से बाते करते कभी, कुछ अनमने से खोए खोए से रहते हैं। पर कभी मुझसे कोई शिकायत भी नहीं करते। बस इन्हीं ख़यालों में खोई गरिमा सुमन (निलेश की माँ) की आवाज़ से चौंक गई। सुमन ने पूछा कहाँ खोई थीं गरिमा। कुछ नहीं माँ बस ऐसे ही, कोई काम था आपको। नहीं बेटा कुछ नहीं कहती हुई बाहर आके बैठ गईं।

अपने पति से कहा आज मुझे ऐसा लग रहा रमेश जैसे मैंने कोई बहुत बड़ी ग़ल्ती तो नहीं की निलेश और गरिमा की शादी करके आज मेरा मन अपराध बोध से भर गया रमेश आज मेरी बहु मेरे ही कारण सब कुछ होते भी सुखी नहीं है,...। सुमन उठी और उसने निलेश को आवाज लगाई निलेश इधर आओ, क्या माँ कहता हुआ निलेश नीचे आया। सुमन कहा आज हम सब बाहर खाना खाने जा रहे हैं, और हाँ पापा ने तुम दोनों की शिमला की टिकिट बुक कर दी आकर तैयारी कर लेना। गरिमा सुना तुमने परसों ही जाना हैं। गरिमा का चेहरा खिल उठा, निलेश मुस्कुरा कर चला गया। रमेश ने कहा आज तुमने बहुत अच्छा काम किया सुमन शायद ये तुम्हें पहले ही कर लेना चाहिए था। ख़ैर..! देर आए दुरुस्त आए।

अब तो तुम भी मुस्कुरा दो अब सब ठीक हो जाएगा। जाओ भई तैयार हो जाओ अब चलना नहीं है क्या? एक गहरी साँस लेते हुए सुमन ने कहा हाँ चलना है न अब सब अच्छा ही होगा दोनों को ख़ुश देखकर मेरे मन का बोझ उतर गया।

प्रतिक्रिया

रमा और राकेश वैसे तो बहुत अच्छे थे। ज़िंदगी भी उनकी सुख पूर्वक व्यतीत हो रही थी। हाँ उनके बीच अक्सर छोटी छोटी बातों को लेकर कहा सुनी हो जाया करती थी, बच्चे जब कहते क्या पापा आप लोग हर बात पर लड़ते हो, तो राकेश कहते इसे लड़ना नहीं बोलते, ये तो नोक झोंक है बेटा इससे तो प्यार बढ़ता है।

राकेश रमा को बहुत कुछ बोल जाया करते थे पर बोलने के पहले वो ये नहीं सोचते थे की उनका बोलना रमा को ठेस भी पहुँचा सकता है। अगर रमा कुछ कह देती तो राकेश को ग़ुस्सा आ जाता। इसलिए आजकल रमा ने भी ज़्यादा बोलना छोड़ दिया था।

रमा के बच्चे बाहर पढ़ रहे थे। वे बस छुट्टियों में ही आते थे। बेटी को लेने और छोड़ने के लिए रमा को जाना पड़ता था। राकेश अकेले थे। पिता की बीमारी के बाद से उन्हें अकेले ही बिज़नेस सम्भालना पड़ता था। इसलिए घर की ज़िम्मेदारी रमा पर आ गई थी।

इस बार रमा की बेटी अपनी परीक्षा ख़त्म होने के बाद घर आई। रमा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। रिया ने अपनी माँ का बहुत ध्यान रखा। अपने पापा से भी कहती, पापा मैं जानती हूँ आप माँ बहुत ध्यान रखते हो। पता है पापा आपकी कई बातें मम्मी को

अच्छी नहीं लगती पर आपसे कुछ कहती नहीं है। राकेश ने कहा अच्छा आगे से ध्यान रखूँगा।राकेश ने रिया से पूछा कब जाना है बेटा कल या परसों बता देना ड्राइवर को बता दूँगा और रिया से बातों में मगन हो गए। बातों बातों में ही रमा ने कह दिया कभी आपने सोचा है एक पिता की क्या जवाबदारी होती है अपनी बेटी के प्रति, कभी आपने सोचा कैसे मैनेज करती होगी अकेले आपकी पत्नी। नहीं सोचा न। सोचोगे भी कैसे। आपको तो कोई मतलब ही नहीं है आप तो कभी फ़ोन तक नहीं लगाते हो आपको तो कोई चिंता ही नहीं है,.... और भी बहुत कुछ रमा बोलती चली जा रही थी और आँसू बहते जा रहे थे।

राकेश ने शायद सोचा भी नहीं होगा की इतनी साधारण सी बात पर रमा की ये प्रतिक्रिया होगी। रिया ने कहा पापा इस बार मैं माँ की तरफ़ हूँ माँ सही कह रही हैं। हम जब जाते है तो आप पूछते ही नहीं कभी फ़ोन ही नहीं करते आप। इस बार जब रमा रिया को छोड़ने गई तो शायद रमा ने भी नहीं सोचा होगा कि उसके जाने के बाद राकेश की प्रतिक्रिया क्या होगी ? राकेश ने रमा के घर वापिस आने तक हर घंटे फ़ोन लगाकर रमा से बात की।

पहचान

नितिन जब छोटा था तब से ही सुनता आ रहा था, की वो कभी कुछ नहीं कर सकता, आलसी है और भी बहुत कुछ ताने उसने बचपन से ही सुने। उसकी वजह थी कि उसे संगीत का बड़ा शौक़ था। पर घर पर सभी को लगता कि नितिन दिनभर सिर्फ़ ख़ाली बैठा रहता है कुछ करता नहीं।

नितिन पहले तो कभी किसी से कुछ बोल नहीं पाता था, पर अब कालेज में सभी के बीच वो हीरो बना हुआ था। दोस्त उसे बहुत प्रोत्साहित करते तब नितिन में बहुत हिम्मत आ गई थी। अक्सर ताने उसकी बुआ ही मारा करती थी उसे भी और अपनी भाभी को भी। एक दिन जब बुआ ने कहा क्यों साहब जादे आ गए,....! ख़ूब रोशन कर रहे हो अपने बाप नाम हैं.....!

नितिन चुपचाप कमरे में चला गया पर उसने सोच लिया था अब बुआ ने कुछ कहा तो वो जवाब ज़रूर देगा।

खाने की मेज़ पर सभी बैठे थे बड़बोली बुआ कहाँ चुप बैठने वाली थी, जैसे ही नितिन आया शुरू हो गईं। अरे.....!

भैया लो गया आपका गवैया बेटा आप तो बस इसकी पढ़ाई लिखाई छुड़वा के डोल मंजीरा पकड़ा तो दिन भर गाता फिरेगा। कब तक आपके नाम का सहारा लेकर जिएगा। इतना सुनते ही नितिन उठ खड़ा हुआ ग़ुस्से में तमतमाता हुआ बोला बस बुआ,... बहुत हुआ अब और नहीं। हमेशा से ही आपको मेरे संगीत से समस्या रही है। एक दिन देखना आप सब मेरा ये संगीत ही मेरी पहचान बनेगा।

क्षमादान

समीर ने बाहर से ही आवाज़ लगाई नीरू,... नीरू,... अरे कहा हो,....?

हाँ क्या है भाई ! इतनी ज़ोर से क्यों चिल्ला रहे हो पूरा घर सर पे उठा लेते हो। बोलो क्या हुआ ? अरे कुछ नहीं। आज मन थोड़ा विचलित सा है। क्यों ?

तुम कहती हो न हमेशा, फलते-फूलते पेड़ों को कभी काटना नहीं चाहिए। हाँ तो ! आगे बोलो क्या हुआ। मैं बहुत दुविधा में हूँ हमारी जो एक ज़मीन है न उसे साफ़ कराना है और वहाँ जो आम का पेड़ लगा है उसमें बौर आई हुई है। उसे काटने की हिम्मत नहीं हो रही जब भी उस वृक्ष के पास जाता हूँ तुम्हारी बातें याद आ जाती हैं।समझ नहीं आ रहा क्या करूँ। मैं उसे यूँ ही छोड़ देता पर वो बीचों बीच है उसे काटना मजबूरी है।

आप ऐसा करो उस आम के वृक्ष की पूजा करो, उनसे इजाज़त लो, क्षमा माँगो फिर उस वृक्ष को काटो। और एक संकल्प लो कि आपको आम के पेड़ लगाना है। इन पेड़ पौधों से हमारा जीवन चलता है। ये हमारे पूजनीय हैं। अगर आप उनसे इजाज़त लेकर उन्हें काट रहें हैं और आपका उद्देश्य उन्हें चोट पहुँचाना नहीं है तो वे आपको अवश्य क्षमादान देंगे।

संगति

कहते हैं 'संगति अच्छी हो तो सब अच्छा नहीं तो बिगड़ते देर नहीं लगती',

'पर ऐसा बिल्कुल नहीं अम्मा',.. कहती हुई अंदर से नीर आई ये क्या अम्मा तुम फिर शुरू हो गई, मैंने तुमसे कितनी बार कहा पर तुम मानती ही नहीं, और हाँ! चाची आप भी कहा अम्मा की बातों में आती हो, ये तो ऐसे ही ख़ुद परेशान होती हैं और दूसरों को भी करती हैं,क्यों अम्मा सही कहा न?

अरे ! अभी तुझमें इतनी समझ नहीं है हमने यूँ ही धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए नीर बेटा, तू समझती काहे नहीं है दुनिया बड़ी ख़राब है बेटा, शादी की उमर हो चली है उ बिटिया की पर उके लच्छन देखी हो बहुतई प्रपंची है। हमको उहका घर आना बिल्कुल पसंद नहीं, कितनी बार बोले हमरे घर न लाया करो, पर सुनती ही नहीं हो तुम,.. अरे 'गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है' बिटिया।

नीर बोली 'अम्मा काहे चिंता करती हो किसी से प्यार करना कोई बुरी बात तो नहीं,उसकी बस यही ग़लती ये है न कि वो किसी से प्यार करती है पर ऐसा नहीं है कि हम भी किसी

ग़लत राह पर चले जाएँगे। मीरा बहुत ही समझदार और अच्छी लड़की है। बस वो किसी को पसंद करती है, इसलिए उसे आप अच्छी नहीं समझती, पर आप उसके चरित्र पर उँगली नहीं उठा सकती अम्मा, और ग़लत भी क्या है अपनी पसंद से शादी करना कोई गुनाह नहीं।'

जब देखो तब सब मोहल्ले की औरतों को बुला कर दुनिया भर की बकवास करती रहती हो, यही समय किसी अच्छे काम में लगाओगी तो अच्छा है। बिगड़ना और सुधरना अपने आप पर निर्भर करता है अम्मा,.. 'और हाँ! चाची अम्मा के पास आके दूसरों की लड़कियों की बुराई ज़रा कम किया करो अपने घर बेटियों को तो सम्भाल लो पहले ज़रा देखो वो क्या गुल खिला रही है।' इतना कहकर हँसते हुए नीर बोली आती हूँ अम्मा मीरा के घर से,...।

संदेह

अमिता काफ़ी लम्बे समय से बीमार थी। उसे तो क्या किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि वो कभी बिस्तर से उठ भी पाएगी या नहीं। पर एक अमिता के पति ही थे जो हमेशा कहते थे तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगी किस बात की चिंता करती हो तुम जब तक मैं हूँ कोई चिंता की ज़रूरत नहीं। ईश्वर हमारे साथ

है हमने किसी का बुरा नहीं किया तो हमारा भी भगवान बुरा नहीं करेंगे।

अमिता को समीर टूटने नहीं देते हर रोज़ वो अमिता में एक नया जोश और विश्वास भर देते उसे वो टूटने नहीं देते बल्कि मज़बूत बनाते।

अमिता भी समीर के प्यार भरे सेवा और समर्पण को देख जी उठती और यही कहती मुझे तो अभी जीना है तुम्हारे लिए बच्चों के लिए।

काफ़ी दिनों के विचार के बाद समीर ने एक अहम निर्णय लिया। उसने अमिता की सारी रिपोर्ट्स पूना, वैलूर और अहमदाबाद भेजी। पूना के डॉ. ने समीर को आश्वासन दिया की अमिता जल्दी ही ठीक हो जाएगी। समीर ने तत्काल रिज़र्वेशन करवाया और अमिता को पूना ले गए। अमिता का घुटना डॉ. ने बदल दिया। अमिता को जैसे नया जीवन मिल गया वो जब चलती तो ऐसे लगता मानो कोई छोटा बच्चा अभी अभी चलना सीखा हो और सिर्फ़ भागना चाहता हो। डॉ. अमिता को कहते आपकी इच्छाशक्ति हम दाद देते हैं आप हारी नहीं इसलिए जल्दी ठीक हो गईं।

अमिता जब वापस आई सभी ने यही कहा, तुम बहुत हिम्मती हो अमिता समीर और बच्चों के प्यार ने और सब की दुआओं ने तुम्हें अच्छा कर दिया। अमिता को आज भी सब कहते हैं इसमें कोई संदेह नहीं कि समीर जैसा पति हर किसी को नहीं मिलता।

अपना पराया

कहते हैं न हम बच्चों को जैसी शिक्षा देते हैं वही वे सिखते हैं। जैसा व्यवहार बड़ों को करते देखते हैं वैसा ही वो भी करते हैं।

कुछ इसी तरह रमा ने किया संयुक्त परिवार में रहते हुए भी अपने बच्चों के मन में अपने -पराए का भेद इस क़दर भरा कि वो हर बात पर ये मेरा, ये तेरा है ही करते। कभी रमा के बच्चों ने मिलकर खेलना तो दूर मिलबाँट कर खाना भी नहीं सीखा। पर इन सब से परे रमा का छोटा बेटा अलग था वो हमेशा कहता मम्मी हम सब तो एक ही घर में रहते हैं फिर आप हमें सबके साथ मिलकर रहने से क्यों मना करती हो कभी साथ खेलने भी नहीं देती। बड़ी माँ तो कितनी अच्छी हैं वो तो हमेशा हमसे प्यार से बात करती हैं।आप नहीं होती, जब घर पर,तो वो ही हमारा ध्यान रखती हैं।पर आप दीदी, भैया से कभी अच्छे से नहीं बोलती। रमा ने गोलू को डाँटकर शांत कर दिया।

एक दिन रमा का सीड़ियों से पैर फिसल गया उसे बहुत चोट लगी। डॉ. ने रमा को एक महीने आराम करने कहा उसके पैर में प्लास्टर बंध गया। रमा परेशान थी ये सोच कर की अब कैसे काम कर पाएगी, बच्चों का ध्यान कौन रखेगा। यही सोच रही थी कि उसे रागिनी की आवाज़ सुनाई दी। वो बच्चों से कह रही थी,

स्कूल से आ गाए, चलो जल्दी से मुँह हाथ धोकर आओ मैं तुम सब का नाश्ता टेबल पर लगाती हूँ। मम्मी को परेशान नहीं करना वो सो रही हैं उनकी तबियत ठीक नहीं है।

रमा बिस्तर पर पड़े पड़े सोच रही थी, मैं कितनी ग़लत थी मैंने हमेशा भाभी के साथ बुरा ही बर्ताव किया,अपने बच्चों को भी ग़लत शिक्षा दी,सदा भाभी के साथ परायों सा व्यवहार किया। इन सब के बावजूद भाभी आज मेरे बच्चों का इतना ध्यान रख रही हैं। शायद भाभी की जगह मैं होती तो ये कभी न कर पाती रमा अपने आँसुओं को न रोक पाई।

प्यार के चिराग़

रुचि की शादी हुए कुछ ही दिन हुए थे, उसके हाथों की अभी मेहंदी भी नहीं छूटी थी कि उसके पति रमेश का निधन हो गया। रमेश अपनी बहन को हवाई अड्डे छोड़ने गया था वहाँ उसका न जाने कैसे पैर फिसल गया और रमेश के सिर पर बहुत बुरी तरह चोट लग गई जिस के कारण उसकी मौत हो गई।

जिस घर में चार दिन पहले शादी की धूम मची थी, वहाँ आज मातम छा गया।रुचि का रो रो कर बुरा हाल था। एक ओर रमेश का पार्थिव शरीर रखा था सारा घर शोक में डूबा था तो

वहीं दूसरी ओर कुछ लोग कानाफूसी में लगे थे रमेश की बुआ ने कुछ लोगों को कहते सुना कि बहु के क़दम अच्छे नहीं थे तभी तो हाथ की मेहंदी भी नहीं छूटी और पति चल बसा। बुआ का मन तो हुआ उन्हें ख़ूब खरी खोटी सुना दें पर वो चुप रहीं क्योंकि ये वक़्त तो रुचि को और रमेश की माँ को सम्भालने का था।

रमेश की मृत्यु से रुचि के जीवन में अंधकार छा गया था वो गुमसुम सी रहने लगी अभी तो उसने अपने जीवन की शुरूवात ही थी। रुचि ने कभी सोचा भी नहीं था कि उसके जीवन में इतनी जल्दी नया सवेरा हो जाएगा। रमेश की मृत्यु के सवा महीने बाद ही रमेश की बुआ ने अपने बेटे पलाश के लिए रुचि हाथ अपने भाई से माँग लिया। सभी स्तब्ध रह गए। पलाश ने भी आगे बढ़कर कहा....!

हाँ! मामाजी मैं इस शादी के लिए तैयार हूँ। बस आपका आशीर्वाद चाहिए।

रुचि का कन्यादान रमेश के माता पिता ने ही किया। हँसी ख़ुशी से बिदा हो रुचि पलाश के घर आई। रुचि ने पलाश से कहा मैंने कभी सोचा ही नहीं था कि रमेश के जाने के बाद मेरी अंधेरी ज़िंदगी में दुबारा प्यार के चिराग़ जलेंगे कभी फिर से नया सवेरा होगा।

विकार और संस्कार

नीतू आज कल तुम बहुत ज़्यादा बत्तमीज होती जा रही हो और निक्की भी बड़ों की इज़्ज़त नहीं करता । तुम लोगों को कोई कुछ बोलता नहीं इसका मतलब ये नहीं की जो मर्ज़ी आए जिसको चाहे उसको कुछ भी बोलते रहो।

बहुत बिगड़ते जा रहे हो दोनों के दोनों ।

आज पापा को घर आने दो देखना आज दोनों की ख़ैर नहीं।

ख़बरदार जो तुमने दादी से इस तरीक़े से बात की ।

तुम्हारा कोई हक़ नहीं है ।

चुपचाप सुनती जा रही नीतू ने बोलना शुरू किया ।

बस हो गया मम्मा आपका बोल के । अब मैं कहती हूँ ।

मम्मा आप मुझे समझाने के पहले ख़ुद देखो कि आप और पापा किस तरह दादी से बात करते हो । आपके पास तो वक़्त भी नहीं है उनके लिए ।

कम से कम हम उनका ध्यान तो रखते हैं आप लोग तो वो भी नहीं। इसलिए आपका कोई हक़ नहीं है मेरी दादी से कहने का या मुझे ही कुछ समझाने का ।

दृढ़ निश्चय

बुधिया अरी ओ बुधिया शहर वाली दीदी तोहक़ा पूछ रही थीं। तू काम पे काहे नहीं गई रे। जा जल्दी हमको बुलाय ख़ातिर भेजी हैं। अरे उठ न बुधिया ..... ।

का हुआ आज फिर तोहरा मर्द मारा है का !

हम जा रहीं है तू काम पे चली जाएब ....

दीदी .....लगता है कल पी खाके ऊऊहका मरद बहुत मारा है अधमरी सी पड़ी थी बुधिया। हम जाए रहे है दीदी बहुत सारा काम पड़ा है हमार।

नीता ने अपनी गाड़ी उठाई और बुधिया के घर निकल पढ़ी ।

बुधिया ओ बुधिया !

क्या हुआ , आज फिर मार ख़ाली पति की।

मैंने कितनी बार कहा तुझसे चल कर एक बार थाने में रिपोर्ट लिखवा दे तू सुनती ही नहीं। कब तक सहेगी ये सब देख क्या हालत बना ली अपनी।

अच्छा चल पहले मरहम पट्टी तो करवा ले।

बुधिया ने कहा दीदी चलो मगर दवाखना नहीं ज़ाईब आज हम भी दृढ़ निश्चय कर लिए है दीदी हम अब अपने मरद के ख़िलाफ़ रपट लिखाय देवत हैं। अब हम और जुलम न सहिब। चलो दीदी चलो,.....!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- अदिति रुसिया
जन्म	- 16.04.1972
शिक्षा	- बी.ए. (पं. रविशंकर युनिवर्सिटी)
माता	- श्रीमती मंजुला गुप्ता
पिता	- स्व.श्री सतीशचंद्र गुप्ता
पति	- श्री संजय रुसिया
पुत्र-पुत्री	- कार्तिक एवं कावेरी
कार्यक्षेत्र	- गृहणी
दायित्व	- राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य - मातृभाषा उन्नयन संस्थान। सलाहकार- अंतरा शब्द शक्ति (मासिक वेब पत्रिका)
प्रकाशन	- जीवन की धूप छाँव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा संकलन), पीर धरा की (काव्य संग्रह), वुमन आवाज (नारी से नारी तक), अंतरा शब्द शक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा में अनेक रचनाएं प्रकाशित।
सम्मान	- अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, वुमन आवाज़ अवार्ड 2018।
उद्देश्य	- अपने मनोविचारों को लोगों तक पहुँचाना।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-12-3
मूल्य- 55/-